नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक दोहरे मापदंड के बीच भारत का हरित संकल्प

जलवायु परिवर्तन आज केवल पर्यावरण से जुड़ी चुनौती नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक असमानता और विकसित तथा विकासशील देशों की अलग-अलग जिम्मेदारियों का भी बड़ा प्रश्न बन चुका है. नई दिल्ली के विज्ञान भवन में 'पर्यावरण और जलवायु गतिशीलता का भविष्य' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दरअसल, इसी असमानता की ओर दुनिया का ध्यान खींचा है. उन्होंने कहा कि विकसित देशों में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन भारत की तुलना में करीब छह गुना अधिक है, फिर भी जलवायु परिवर्तन के लिए विकासशील देशों को ही अक्सर कठघरे में खड़ा किया जाता है. जलवायु न्याय की दृष्टि से यह निश्चित रूप से विचारणीय सवाल है.

भारत की सभ्यता और जीवनशैली में प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की सोच सदियों से रही है. यही कारण है कि विकास की अपनी जरूरतों के बावजूद भारत जलवायु परिवर्तन के खिलाफ वैश्विक प्रयासों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है. प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन अभी भी वैश्विक औसत से काफी कम होने के बावजूद भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार और उत्सर्जन में कमी के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किए हैं. महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत की जलवायु नीति केवल अंतरराष्ट्रीय दबाव का परिणाम नहीं, बल्कि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन साधने की अपनी जरूरत से भी जुड़ी है.

पिछले एक दशक में भारत ने जिस गति से अपनी अर्थव्यवस्था का विस्तार किया है, उसी के साथ स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में भी क्षमता बढ़ाने का प्रयास किया गया है. सौर और पवन ऊर्जा के विस्तार से लेकर हरित हाइड्रोजन और परमाणु ऊर्जा तक, ऊर्जा के विविध और अपेक्षाकृत स्वच्छ स्रोतों पर जोर दिया जा रहा है. भारत जी-20 का वह देश है जिसने पेरिस समझौते के तहत निर्धारित अपने कुछ प्रमुख जलवायु लक्ष्यों को निर्धारित समय से पहले हासिल किया है. बीते वर्षों में पवन ऊर्जा क्षमता में हुई उल्लेखनीय वृद्धि भी इस दिशा में आगे बढ़ते कदमों को दर्शाती है .हालांकि, भारत की हरित ऊर्जा यात्रा के सामने चुनौतियां कम नहीं हैं. ऊर्जा की बढ़ती मांग, औद्योगिकीकरण, रोजगार और तेज आर्थिक विकास की जरूरतों के बीच कार्बन उत्सर्जन को नियंत्रित करना आसान काम नहीं है. ऐसे में किसी एक ऊर्जा स्रोत को पूरी तरह खारिज करने के बजाय भारत के लिए ऊर्जा के विविध विकल्पों का संतुलित इस्तेमाल अधिक व्यावहारिक रास्ता हो सकता है.

बहरहाल, जलवायु परिवर्तन की लड़ाई में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न वैश्विक जिम्मेदारी का है. जिन देशों ने औद्योगिक विकास के लंबे दौर में बड़ी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन किया है, उनसे अपेक्षा स्वाभाविक है कि वे विकासशील देशों को स्वच्छ तकनीक और पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराने में अधिक बड़ी भूमिका निभाएं. विकासशील देशों से उत्सर्जन कम करने की अपेक्षा तभी व्यावहारिक होगी, जब उन्हें विकास की जरूरतों से समझौता किए बिना हरित तकनीक अपनाने के पर्याप्त साधन भी मिलें .भारत ने अपनी ओर से यह संकेत दिया है कि आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण को एक-दूसरे का विरोधी मानना जरूरी नहीं है. जरूरत इस बात की है कि विकसित दुनिया जलवायु न्याय के सिद्धांत को व्यवहार में उतारे और विकासशील देश भी अपनी ऊर्जा जरूरतों को ध्यान में रखते हुए स्वच्छ तकनीक की ओर तेजी से बढ़ें. जलवायु संकट किसी एक देश की समस्या नहीं है. इसलिए इसका समाधान भी साझा जिम्मेदारी, समानता और व्यावहारिक वैश्विक सहयोग से ही संभव होगा.

टैरिफ के हंटर से कब तक डराएंगे ट्रंप?

आखिरकार अमेरिकी संसद के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव ने भी 262-159 मतों से रूस के खिलाफ सैंक्शन बिल पास कर दिया. सीनेट इसे पहले ही 86-11 वोट से मंजूरी दे चुकी है. अब इसे ट्रंप के हस्ताक्षर के लिए व्हाइट हाउस भेज दिया गया है, ट्रंप के हस्ताक्षर होते ही यह कानून बन जायेगा. इसके बाद वह उन देशों पर, जो रूस के साथ व्यापार करते हैं, 500 फीसदी तक टैरिफ लगा सकते हैं. फिलहाल भारत तथा और कई देशों पर 100 फीसदी टैरिफ लगाए जाने की धमकी चर्चा में है. हालांकि भारत ने अभी तक इस धमकी पर कोई पलटवार नहीं किया, लेकिन धीमे से स्पष्ट कर दिया है कि हम अपनी ऊर्जा सुरक्षा पर कोई समझौता नहीं करेंगे, जहां हमें सस्ता तेल मिलेगा, हम खरीदेंगे. भारत को बेधड़क अपने इस स्टैंड पर अड़े रहना चाहिए. असली सवाल टैरिफ से ज्यादा उस कूटनीतिक खेल का है, जिसमें व्यापार, तेल और भू-राजनीति एक ही शतरंज की बिसात पर आ गए हैं. वॉशिंगटन केवल यह नहीं चाहता कि 'रूस से तेल मत खरीदिए', अमेरिका यह तय करने की कोशिश भी कर रहा है कि रूस के साथ किसी भी तरह के संबंध रखने की कीमत दुनिया के दूसरे देशों को भी चुकानी पड़े. हम रूसी कच्चे तेल के बड़े खरीदार हैं. भारत ने अपनी ऊर्जा जरूरतों तथा बाजार की परिस्थितियों के आधार पर रूसी तेल खरीदना बढ़ाया. अमेरिका का तर्क है कि रूसी ऊर्जा खरीद से मॉस्को को राजस्व मिलता है और उस राजस्व का इस्तेमाल युद्ध के लिए किया जा सकता है. भारत का तर्क अलग है- भारत को अपने 140 करोड़ लोगों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करनी है और वह तेल खरीद को बाजार की परिस्थितियों तथा अलग-अलग स्रोतों के आधार पर तय करेगा. भारत के सामने एक साथ कई चुनौतियां हैं- अमेरिका के साथ व्यापार, रक्षा और प्रौद्योगिकी संबंध; रूस के साथ ऊर्जा और रक्षा संबंध; पश्चिम एशिया की अस्थिरता, चीन के साथ रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और अपनी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के लिए ऊर्जा की जरूरत. ऐसे में दिल्ली शायद सार्वजनिक टकराव के बजाय बातचीत, विकल्प और प्रतिरोध- तीनों को एक साथ चलाने की

रणनीति पर काम कर रही है. सवाल है आखिर 100 फीसदी टैरिफ से कितना बड़ा पहाड़ टूटेगा? यदि अमेरिका भारतीय उत्पादों पर वास्तव में 100 फीसदी अतिरिक्त शुल्क लगाता है तो अमेरिकी बाजार में भारतीय सामान की कीमत बढ़ सकती है. इससे निर्यातकों के मार्जिन पर दबाव आ सकता है, कुछ उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता घट सकती है और अमेरिकी आयातक वैकल्पिक आपूर्तिकर्ताओं की तलाश कर सकते हैं. टैरिफ का भुगतान केवल भारत नहीं करता. अमेरिकी आयातक भी ऊंची कीमत चुकाता है. अमेरिकी उपभोक्ता तक उसका असर पहुंच सकता है. कहने का मतलब 100 फीसदी टैरिफ कोई ऐसा हथियार नहीं है जिसे चलाने पर केवल निशाना घायल होता है. यही वजह है कि कानून में शक्ति होना और उसका वास्तविक इस्तेमाल होना- दो अलग-अलग बातें हैं. रूस वर्षों से अमेरिकी और पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच अपनी अर्थव्यवस्था चला रहा है. ईरान भी लंबे समय से अमेरिकी प्रतिबंधों का सामना करता आया है. लेकिन भारत की स्थिति अलग है. भारत पर प्रतिबंध ज्यादा असर डालेंगे. हमारे वित्तीय लेन-देन कठिन कर देंगे, बाजार सीमित कर देंगे, तकनीक और निवेश तक पहुंच प्रभावित हो सकती है और व्यापार की लागत बढ़ सकती है. भारत अमेरिकी बाजार से गहराई से जुड़ा है. इसलिए रूस या ईरान के अनुभव को हूबहू भारत पर लागू नहीं किया जा सकता. क्योंकि असली लड़ाई तेल की नहीं, विकल्पों की है. भारत के सामने विकल्प हैं- रूसी तेल पर निर्भरता का अनुपात बदलना, अन्य स्रोतों से खरीद बढ़ाना, अमेरिकी कंपनियों के साथ व्यापारिक रिश्तों को मजबूत करना, द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत जारी रखना और जरूरत पड़ने पर अपने व्यापारिक हितों की रक्षा के उपाय तलाशना. रूसी तेल अचानक छोड़ना ऊर्जा कीमतों पर असर डाल सकता है. दिल्ली शायद एक ऐसी नीति चाहती है जिसमें न रूस पूरी तरह छूटे, न अमेरिका पूरी तरह रूठे और न भारतीय ऊर्जा सुरक्षा खतरे में पड़े. भारत का कूटनीतिक दांव यही है.

भारत को कोई रास्ता तलाशना होगा

टैरिफ का भुगतान केवल भारत नहीं करता. अमेरिकी आयातक भी ऊंची कीमत चुकाता है. अमेरिकी उपभोक्ता तक उसका असर पहुंच सकता है. कहने का मतलब 100 फीसदी टैरिफ कोई ऐसा हथियार नहीं है जिसे चलाने पर केवल निशाना घायल होता है. यही वजह है कि कानून में शक्ति होना और उसका वास्तविक इस्तेमाल होना- दो अलग-अलग बातें हैं. रूस वर्षों से अमेरिकी और पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच अपनी अर्थव्यवस्था चला रहा है

पीएफ के लिए और बढ़ानी थी वेतन सीमा

वेतनभोगियों की आर्थिक सुरक्षा के उद्देश्य से कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने वेतन मर्यादा 15,000 रुपए से बढ़ा कर 25,000 रुपए कर दी. इसके पहले तक 15,000 से अधिक मूल वेतन या बेसिक पे होने पर पीएफ नहीं कटता था. अब यदि किसी नवनियुक्त कर्मचारी का मूल वेतन 15,000 से ज्यादा होगा तो वह ईपीएफओ का अनिवार्य लाभार्थी हो जाएगा. सरकार के इस उचित निर्णय से और भी 51,00,000 नौकरीपेशा लोग भविष्यनिधि के दायरे में आ जाएंगे. उन्हें पीएफ के साथ निवृत्ति वेतन (पेंशन), बीमा सुरक्षा का लाभ भी मिलेगा. इस निर्णय के फलस्वरूप सरकारी खजाने पर 11,339 करोड़ रुपए का बोझ आएगा, लेकिन उन नौकरीपेशा लोगों को राहत मिलेगी जिनका मूल वेतन 15,000 रुपए से ज्यादा होने की वजह से वह भविष्यनिधि योजना से वंचित थे. वास्तव में बढ़ती महंगाई, जीवनयापन और परिवार के खर्च व अन्य जिम्मेदारियों को देखते हुए यह मर्यादा 25,000 की बजाय 30,000 रुपए कर दी जाती तो बेहतर होता. आम तौर पर वेतनभोगियों के भविष्य को लेकर अनिश्चितता बनी रहती है. भविष्यनिधि की बदौलत वह अपने सेवानिवृत्ति के बाद जीवनयापन के लिए कुछ पैसे बचा सकते हैं. वेतन मर्यादा में यह वृद्धि लगभग 12 वर्ष बाद हुई है. पहले भविष्य निधि पर 8.75 प्रतिशत ब्याज जुड़ता था जो अब घटकर 8.25 प्रतिशत पर आ गया है. एक मुद्दा यह भी है कि क्या निजी क्षेत्रों के उद्योगों के मालिक इस बढ़ी हुई मूल वेतन सीमा के अनुसार कर्मचारियों को पीएफ का लाभ देंगे या कानून के दायरे में रहते हुए वेतन के ढांचे में कुछ हेरफेर कर कर्मचारियों को इस लाभ से वंचित करेंगे? आखिर कर्मचारियों के पीएफ में उन्हें भी तो अपना अंशदान करना पड़ता है. इसलिए देखना होगा कि कर्मचारियों की हितरक्षा का यह कदम सही तरीके से लागू हो.

विंध्य की डायरी

भाजपा की बैठक में पहले मान-मनौव्वल, फिर चला संगठन

डॉ. रवि तिवारी

सिंगरौली भाजपा की जिला कार्यसमिति की पहली बैठक भले ही आखिरकार पूरी उपस्थिति के साथ हो गई, लेकिन बैठक से पहले हुए मान-मनौव्वल ने संगठन के भीतर चल रही चर्चाओं को जरूर सामने ला दिया. जिला कार्यसमिति की घोषणा के चंद दिनों बाद बुलाई गई इस बैठक में शुरुआत में अपेक्षित संख्या में सदस्य नहीं पहुंचे. बताया जा रहा है कि कई वरिष्ठ और पुराने कार्यकर्ताओं को बैठक में आने के लिए काफी मान-मनौव्वल करना पड़ा. संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों को भी दखल देना पड़ा, जिसके बाद सदस्य बैठक में पहुंचे और कुर्सियां खाली नहीं रहीं. संगठन के गलियारों में चर्चा है कि कार्यसमिति के गठन को लेकर कुछ पुराने कार्यकर्ताओं में नाराजगी है. विशेष रूप से पूर्व मंडल अध्यक्षों और लंबे समय से संगठन में सक्रिय रहे कार्यकर्ताओं को अपेक्षित स्थान नहीं मिलने की बात कही जा रही है. वहीं यह भी चर्चा है कि जिला नेतृत्व के करीबी लोगों को अधिक तवज्जो मिली. हालांकि इन चर्चाओं की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है. मुद्दा सिर्फ एक बैठक का नहीं, बल्कि संगठन में संवाद और सम्मान का है. भाजपा जैसे कैडर आधारित संगठन में कार्यकर्ता यदि अपनी उपेक्षा महसूस करने लगें तो इसे समय रहते समझना जरूरी है. जिला अध्यक्ष के लिए भी यह आत्ममंथन का अवसर है कि संगठन में पसंद से ज्यादा अनुभव, सक्रियता और सामूहिकता को महत्व दिया जाए. क्योंकि राजनीति में आज की छोटी नाराजगी कल बड़ा सवाल बन सकती है. आने वाले नगरीय निकाय और विधानसभा चुनावों से पहले यदि कार्यकर्ताओं के बीच दूरी बढ़ी तो उसका असर संगठन की जमीन पर दिखाई दे सकता है.

मौत के पहले जागे तंत्र

विंध्य के सबसे बड़े संजय गांधी अस्पताल में लोग इस उम्मीद से आते है कि उन्हें इलाज के साथ एक नया जीवन मिलेगा पर सिस्टम की लापरवाही और बेलगाम व्यवस्था ने न जाने कितने जीवन खा लिए. अगर प्रसूता कल्पना की मौत न होती तो शायद शासन-प्रशासन की नींद न टूटती. विंध्य के चिकित्सा जगत में पहली बार ऐतिहासिक कार्यवाई हुई है. न्याय की आवाज के आगे झुकना पड़ा. ड्यूटी डॉक्टर, नर्स का निलंबन और डीन के साथ अधीक्षक को एक झटके में हटाना पड़ा. उच्च स्तरीय जांच टीम बैठाई गई, कलेक्टर ने मजिस्ट्रियल जांच के आदेश दिये, सुनवाई भी शुरू हो गई. जांच के बाद दोषियों पर कार्यवाई की गाज गिरनी बाकी है. लेकिन न्याय की आवाज के बीच तीन साल पूर्व जिस महिला डॉ. सोनल अग्रवाल की सेवा समाप्त की गई थी उसे कार्यकारिणी समिति की बैठक में सेवा समाप्त का आदेश जारी करना पड़ा. सवाल यह उठता है कि तीन साल तक अपर मुख्य सचिव के आदेश को अमलीजामा क्यों नही पहनाया गया, आखिर कौन बचाता रहा? यह वही महिला डॉक्टर है, जिनकी ड्यूटी के दौरान जच्चा-बच्चा की मौत हुई. एक और महिला डॉक्टर की वेतन वृद्धि रोकी गई है, यह कार्यवाई तीन साल पहले होनी थी. अगर जच्चा-बच्चा का मामला सामने न आता और ऐतिहासिक विरोध न होता तो शायद ही कोई कार्यवाई होती. पहली बार न्याय की आवाज के साथ सरकार ने इस तरह का एक्शन लिया है.

गुढ़ में नाग्रेंद्र सिंह के उत्तराधिकारी को लेकर छिड़ी चर्चा

गुढ़ विधानसभा सीट से भाजपा विधायक नागेन्द्र सिंह की बड़ी बहू श्रीमती रश्मि राजा सिंह के राजनीति में आने और भाजपा की सदस्यता ग्रहण करने के बाद राजनीतिक गलियारे में उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी बनने की चर्चाएं तेज हो गई हैं. हाल ही में रीवा सांसद के हाथों सदस्यता ग्रहण की है. उनकी इस राजनीतिक एंट्री को आगामी विधानसभा चुनाव और नागेन्द्र सिंह के राजनीतिक उत्तराधिकारी के रूप में देखा जा रहा है. हालाकि पार्टी या परिवार की ओर से अभी आधिकारिक तौर पर इसकी पुष्टि नही हुई है, लेकिन सदस्यता के बाद कई तरह की चर्चाएं चल रही हैं. माना जा रहा है कि विधायक जी ने आने वाले चुनाव को लेकर तैयारी अभी से शुरू कर दी है. भविष्य के समीकरणों और महिला नेतृत्व की दावेदारी से जोड़ कर देखा जा रहा है. अब सवाल यह है कि नजदीकी रिश्तेदार जिला पंचायत उपाध्यक्ष प्रणव प्रताप सिंह का क्या होगा, टिकट में पेंच फंसेगा. हालांकि पिछले एक माह से प्रणव प्रताप क्षेत्र में एक बार फिर तेजी से सक्रिय हैं . बीच में सक्रियता थम गई थी.

निशानेबाज

एआई का चढ़ने लगा बुखार, न बने बंदर के हाथ तलवार

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से डर लग रहा है. कहते हैं वह इंसान के नियंत्रण से बाहर होकर भस्मासुर बन सकती है और 10 वर्ष में मानव जाति को नष्ट कर देगी.' हमने कहा, 'अफवाहों पर ध्यान मत दीजिए. इंसान ने एआई को बनाया है, एआई ने इंसान को नहीं! अपनी अक्ल पर भरोसा रखिए, नकली बुद्धिमत्ता के फेर में मत रहिए. एआई कभी पूरी तरह इंसानी दिमाग की बराबरी नहीं कर सकती. एआई का समझदारी और विवेक से इस्तेमाल करने से उन्नति होगी और खुशहाली आएगी. उसे कंट्रोल में रखना होगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, एक राजा के चेहरे पर बार-बार मक्खी आकर बैठ जाती थी. उसने अपने पालतू बंदर के हाथ में तलवार देकर मक्खी भगाने की ड्यूटी सौंप दी. राजा की नाक पर मक्खी बैठी तो बंदर ने तुरंत चपलता से तलवार चला दी. एआई रूपी बंदर को भी नियंत्रण में रखकर सावधानी से नचाया जाए वरना अनर्थ हो सकता है.

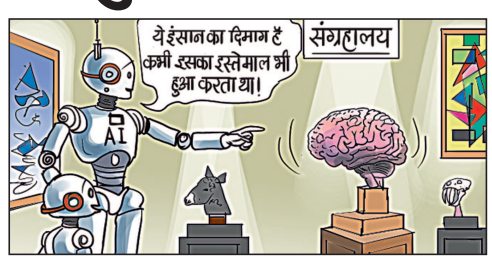

एंथ्रोपिक कंपनी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि हाल ही उत्तर यमन में एक शस्त्र निर्माता समूह ने 'क्लाड' नामक ऊंचे दर्जे की एआई का इस्तेमाल कर रॉकेट और प्रक्षेपास्त्र बनाने के लिए मार्गदर्शन सॉफ्टवेयर तैयार करने का प्रयास किया. कंपनी की सुरक्षा इकाई ने समय रहते इसे रोक दिया. जरा सोचिए कि एआई का मिसयूज कर आसानी से विनाशकारी शस्त्र बनाए जा सकते हैं.' हमने कहा, 'एंथ्रोपिक के प्रमुख डारियो अमोदेई ने इस खतरे को भांपते हुए घोषणा की कि उनकी कंपनी अब एडवांस एआई मॉडल के अनुसंधान व सुरक्षा का मूल्यमापन करने के लिए तीसरे पक्ष के निरीक्षकों को अपने साथ शामिल करेगी. यह ध्यान रखा जाएगा कि एआई का बर्ताव मानवीय हित से सुसंगत है या नहीं! जिस तरह औषधियां बनाते समय जांच पड़ताल की जाती है वैसा ही एआई के संबंध में भी किया जाएगा. उसका जवाबदारी से इस्तेमाल सुनिश्चित किया जाएगा.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इसकी गारंटी कौन लेगा? दुनिया में चंगेजखान, नादिरशाह, हिटलर जैसे बर्बर लोगों का इतिहास रहा है. आज भी कुछ नेताओं पर कुछ युद्धोन्माद सवार है. ऐसे सनकी व हिंसक प्रकृति के लोग एआई का जाने कैसा इस्तेमाल करेंगे ? यदि आतंकियों को पालने वाले देश के शासकों के हाथ एआई लगी तो वह क्या करेंगे?' हमने कहा, 'आगे क्या होगा, मत सोचिए. अभी अपनी जिंदगी निडर होकर आराम से बिताइए क्योंकि जो डर गया, समझो मर गया !'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर 12385

- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■	8				
	■	9		■	10		■
11	12		■	13		■	14
■	15		■	16		17	
18			■		■	19	
20		■	21		22		
■	23			■	24		■

ऊपर से नीचे
1. बलराम, वायु (सं) 2. निशा 3. प्रविष्ट, शामिल 4. सबका स्वामी ईश्वर (सं.) 5. धातु की लंबी तथा मोटी छड़ 6. निषिद्ध, वर्जित 9. वैभवपूर्ण, तड़क-भड़क वाला 12. किसी रचना या ग्रंथ के गुण दोष आदि का प्रतिपादन करने वाला 13. भीषण, भयानक, डरावना 14. खिसकना 17. व्यथित मन को दूसरी ओर लगाना, चित्त प्रसन्न करना 18. मेहंदी 21. तिक्की (ताश की) 22. थोड़ा, कम (सं.)

बाएं से दाएं
1. दालान, मकान के आगे का छाया हुआ भाग 4. विषम, ऊंचा- नीचा, असदृश्य 7. बुरी आदत 8. जोर से हंसना 9. एक प्रकार की ऊनी चादर, दुशाला 10. लिखी बात, लिखावट 11. वस्त्र, कपड़ा (सं.) 13. संसार, जगत 15. स्त्री जाति का प्राणी या जीव, नर का उल्टा 16. चितकबरा, रंगबिरंगा 18. पानी की लहर, तरंग 19. उचित अधिकार, सत्य, उचित या ठीक बात 20. नृत्य 21. कष्ट या पीड़ा से बेचैन होना 23. टूटी-फूटी वस्तुओं को बेचने वाला व्यक्ति 24. पेड़ का धड़

Solution 12384

अ	प	य	श	■	जा	■	चा
ख	स	म	■	■	ग्र	ह	ण
रो	■	लो	क	गी	त	■	क्य
ट	प	क	ना	■	■	रा	■
■	छ	■	ग	र	मा	ह	ट
या	ता	या	त	■	न	■	ह
त	वा	■	■	व	ध	स्था	ल
ना	■	गु	ल	श	न	■	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें, आर्थिक हानि होगी. भूमि भवन संबंधी मामलों में विवाद होगा. भावुकता में कोई भी निर्णय न करना हितकर रहेगा. क्रोध पर नियंत्रण रखें. वर्ष के मध्य में सुखद यात्रा का योग है. स्थाई लाभ की योजना बनेगी. मित्र या भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में मित्रों से बौद्धिक विचार विमर्श होगा. सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी. लेखनादि कार्यो में सफलता प्राप्त होगी. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की सुखद यात्रा का योग है. स्थाई लाभ की योजना बनेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों की आर्थिक गृहकार्यो में व्यस्तता रहेगी. सिंह राशि केव्यक्तियों का भूमि भवन आदि संबंधी कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी. मित्रों से बौद्धिक विचार विमर्श होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को व्यापार में लाभ होगा. मित्रों व भाईयों से सहयोग बना रहेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को क्रोध से बचना चाहिये.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर सुशील व्यक्तित्ववान परिश्रमी होगा. शरीर से कोमल एवं भावुक मन का होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. अपनी मनमर्जी का मालिक होगा. कम बोलेगा, जो भी बोलेगा, वह बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण होगा. यात्राप्रिय रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

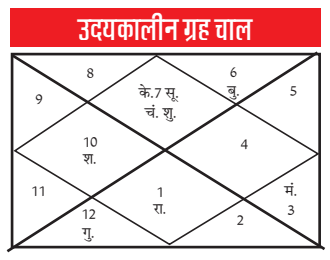

पंचांग

रा.मि. 30 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल दशमीं चन्द्रवासरे शाम 6/18, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे दिन-रात, शोभन योगे दिन 4/58, गर करणे सू.उ. 5/58, सू.अ. 6/2, चन्द्रचार धनु दिन 10/58 से मकर, शु.रा. 10,12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9.

शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल दशमीं को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से समस्त प्रकार के अनाजों में जैसे गेहूँ, जौ, चना, मक्का, बाजरा, के भाव में जोरदार मंदी होने की संभावना है, तिल, तेल, तिलहन,सरसों के भाव में साधारण नरमी होगी.

भाग्यांक 1475 है.

मेष- आमोद प्रमोद के साधन उपलब्ध रहेंगे. किसी व्यक्ति से भेंटवार्ता होगी. अतिथि आगमन का योग है.

वृषभ- कौटुम्बिक कार्यो में सावधानी रखकर कार्य करें. लाभदायक अवसरों की प्राप्ति होगी. अतिथि सत्कार होगा.

मिथुन- कौटुम्बिक मामलों में सावधानी रखें. वायदा सोच विचार कर करना उचित होगा. प्रवास का योग है.

कर्क- प्रतिष्ठा एवं सम्मान मिलेगा. शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी. अतिथि आगमन हो सकता है. व्ययभार बढ़ेगा.

सिंह- वाहनादि का प्रयोग करते समय सावधानी रखें. निजी पुरुषार्थ की प्राप्ति होगी. नया समाचार प्राप्त हो सकता है.

कन्या- पारिवारिक मतभेद हो सकते हैं. दूसरों के कारण आपको परेशानी हो सकती है. चिन्ता का समाधान होगा.

तुला- किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा, खर्च बढ़ेगा. शत्रु वर्ग पराजित होगा. हर्ष बना रहेगा.

वृश्चिक- व्यापार व्यवसाय में सावधानी रखें. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी. पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

धनु- धार्मिक कार्यो में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक क्षेत्र में प्रगति होगी. मन में शांति और संतोष बना रहेगा.

मकर- नौकरी एवं राजकीय कार्यो में संलग्नता रहेगी. मन में संतोष बना रहेगा. परिश्रम की अधिकता बनी रहेगी.

कुम्भ- घर में अतिथि आगमन का योग है. अनावश्यक विवाद न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा. यात्रा सुखद रहेगी.

मीन- राजनैतिक कार्यो में सावधानी रखें. अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें. कार्य में विलंब होगा.

SUDOKU 7517

9		6		3		4		8
	2				9		7	
4			1	6				2
		8			2		3	
1		4				2		5
	3		5			8		
7				9	5			3
	8		6				4	
6		2		7		5		1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7516

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7